|| घाट ||

सीढ़ियों के उस ओर बिक रही लकड़ी,
और जल रही हैं सदा चिताएं इस ओर।

वहां देखो चल रहा शिशुओं का मुंडन,
और भिक्षु कर रहे यहाँ तर्पण निरंतर।

हो रहा देखो वहां पूर्वज पिंडों का दान,
और यहाँ सजा है मुस्टण्डों का खान-पान।

घिस रहा है चन्दन पत्थर पर कोइ,
तो मल रहा है खोपड़ी पर तेल कोइ।

जलते कंडों का धुआं जा रहा किस ओर?
कहाँ-कहाँ से आ रहा ये भस्म मेरी ओर?

यहीं कहीं देखा था हरिश्चन्द्र को मैंने,
और था सुना तुलसी को दोहे रचते।

कबीर यहीं रविदास यहीं, आदि-शंकर दर्शन यहीं,
बोधिसत्व का भास यहीं, नानक का पैगाम यहीं।

रंग यहीं बदरंग यहीं, मेरा-तेरा सत्संग यहीं,
उमंग यहीं उत्साह यहीं, विधवा का विलाप यहीं।

मद यहीं मत्सर यहीं, शेष-अवशेष सब कुछ यहीं,
भूत यहीं भविष्य यहीं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश यहीं।

जानते हो तुम समीरा? केवट यहीं, नैया यहीं,
इस पार का वास्ता यहीं, उस पार का रास्ता यहीं।

समीर खांडेकर

२०१६